licence-holders. Licences are issued only to such persons who will be certified by the inspectors. In case this Bill is passed hurriedly in this way, I think, it will create troubles.

The agriculturists make arrangements for the seeds from one source or the other. They will be put to trouble if they are asked to purchase seeds only from the licence-holders.

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)
(MR. SPEAKER *in the chair*)

It will also increase corruption and sometimes it may be difficult for them to get seeds in time. Consequently they will shift to harvests. I feel, therefore, that this Bill should be considered once again.

We have a plan under consideration to set up co-operatives in every nook and corner of the country. The seeds should be supplied through these co-operatives.

Again I would submit that this Bill should be considered once again

Shri Bade: I do not approve this Seeds Bill. There are so many kinds of seeds. There is a breeder seed, certified seed, foundation seed, hybrid seed, notified seed, registered seed etc. I think...

Mr. Speaker: You may continue next time.

कच्छ-सिंध सीमा सम्बन्धी स्थिति तथा प्रधान मंत्री की रूस यात्रा के बारे में वक्तव्य

STATEMENT RE. SITUATION ON KUTCH-SIND BORDER AND PRIME MINISTER'S VISIT TO THE U.S.S.R.

प्रधान मंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : 28 अप्रैल, 1965 को वक्तव्य देने के पश्चात कच्छ-सिंध सीमा की स्थिति के बारे में मैं सभा को समय समय पर अवगत कराता रहा हूं ।

कुछ दिन पूर्व प्रधान मंत्री विल्सन ने जो सुझाव दिये थे उन पर कार्यवाही जारी रखी गई थी तथा धीरे धीरे ठोस प्रस्ताव बनाये गये हैं ताकि इस समस्या का सन्तोषजनक हल हो सके । हमने प्रत्येक अवसर पर यह बात स्पष्ट कर दी है कि युद्ध-विराम केवल तभी सम्भव हो सकता है जब 1 जनवरी, 1965 जैसी यथापूर्व स्थिति कायम करने के लिये एक साथ समझौता किया जाये । हमने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जब यथापूर्व स्थिति कायम हो जायेगी तब ही हम उन प्रक्रियाओं पर कार्यवाही करेंगे जिन पर सीमा निर्धारण करने के लिये दोनों सरकारों में पहले समझौता हो चुका है ।

हमें ब्रिटिश सरकार से कुछ पत्र प्राप्त हुए हैं । उन में उन्होंने ऐसी बातों का उल्लेख किया हुआ है जिन पर दोनों सरकारों को विचार करना है । परन्तु अभी तक न तो कोई मसौदा तैयार हुआ है और न ही प्रस्तुत किया गया है । मैं फिर यही कहना चाहता हूं कि हमने इस सभा में जो निर्णय किया है हम उस पर स्थिर रहेंगे । पहले पूर्व-स्थिति कायम होनी चाहिये, उसके पश्चात हम

मंत्री स्तर पर बातचीत करने को तैयार हैं और यदि आवश्यकता हो तो मामला मध्यस्थ निर्णय से भी तय किया जा सकता है ।

हमारी नीति तथा हमारे इरादे बिल्कुल स्पष्ट हैं । हम इस बात में विश्वास नहीं रखते कि एक ओर तो हम शांति की बात करें और दूसरी ओर आक्रमण करें ।

मैं माननीय सदस्यों को आश्वासन देता हूं कि हमारी सेनायें तैयार हैं और देश की प्रादेशिक अखण्डता के लिये दृढ़ संकल्प हैं । इस देश के लोगों ने जो समर्थन दिया है उससे उनका मनोबल बहुत ऊंचा हो गया है ।

मैं कल प्रातःकाल मास्को जा रहा हूं और अपने मित्र देश रूस के लिये, जिसने इतने संकट में हमारी सहायता की है, शुभ कामनायें तथा दोस्ती की भावना अपने साथ ले जा रहा हूं ।

श्री रंगा (चित्तूर) : श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने जो आज सुझाव दिया था वह बहुत ही महत्व-पूर्ण सुझाव है । मुझे आशा है कि प्रधान मंत्री ने उस पर अब तक विचार कर लिया होगा और मास्को जाने से पहले वह हमें बता सकेंगे कि उनकी अनुपस्थिति में सरकार के वरिष्ठतम सहयोगी उनकी ओर से उसी प्राधिकार में काम करेंगे । इस विशिष्ट मामले के संबंध में मुझे खुशी है कि प्रतिरक्षा सेना को समय और वर्तमान संकट की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये जोश में रखा जायेगा । मैं तो केवल यह चाहता हूं कि उनकी अनुपस्थिति में जल्दबाजी में ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये जिससे मामला और पेचीदा हो जाये ।

श्री हो० ना० मुकर्जी (कलकत्ता-मध्य) : रूस ने बड़े आड़े समय में हमारा साथ दिया है और मुझे आशा है कि श्री शास्त्री को भारत के लिये और भी अधिक सहायता मिलेगी, अब जबकि हम कुछ कठिनाई में हैं ।

मैं मानता हूं कि ब्रिटिश सरकार के रवये के संबंध में मुझे कुछ शक है क्योंकि मैं यह नहीं भूल सकता हूं कि अमरीका के साथ साथ उन्होंने भी काश्मीर और अन्य विषयों के संबंध में हर बार हमारी कीमत पर पाकिस्तान को सहायता दी है । मुझे शक है कि वे चालाकी से कुछ ऐसा फैसला करेंगे जिसे हम नहीं चाहते । परन्तु मैं अपनी सरकार पर विश्वास करता हूं क्योंकि इस विश्वास के बिना संसदीय पद्धति कार्य नहीं कर सकती । मैं चाहता हूं कि प्रधान मंत्री यह आश्वासन दें कि हम ऐसा कोई समझौता नहीं करेंगे जो हमारे सिद्धांतों के विरुद्ध हो ।

श्री उ० मू० त्रिवेदी (मंदसौर) : मैंने प्रधान मंत्री का वक्तव्य सुना और सुनकर मुझे कुछ घबराहट सी महसूस हुई । वहां जाकर वह जो कुछ कहें उसमें बहुत सावधानी बर्तें और बहुत सोच विचार कर कहें । कोई ऐसी बात वहां पर अपने मुंह से न निकालें जिससे अन्य देशों से हमारे संबंधों पर, जो पहले से ही कुछ अच्छे नहीं हैं, बुरा प्रभाव पड़े । हम बहुत कठिन समय में से गुजर रहे हैं । इसमें सन्देह नहीं कि रूस में हमारे अच्छे मित्र है । परन्तु हमारे आसपास कुछ और भी अच्छे मित्र हैं जिनका वर्तमान रवैया बहुत सहायतापूर्ण नहीं रहा है । उनके अपने कारण हो सकते हैं, परन्तु हमें उन कारणों को समाप्त करने के लिये पूरे प्रयत्न करने है और उनके साथ फिर से मित्रता गांठनी है ।

मैं निश्चय ही उनकी सफलता चाहता हूं, परन्तु हमें यह याद रखना चाहिये कि देश इस समय संकट में है और उनको वह सभी कुछ करना चाहिये जो देश के हित में है ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : माननीय सदस्यों ने जो अपने विचार व्यक्त किये उसके लिये मैं उनको धन्यवाद देता हूं । मैं सभा को बता दूं कि मैंने आवश्यक प्रबन्ध कर दिये हैं और सारी जिम्मेवारी कबिनेट के मेरे वरिष्ठ साथियों पर होगी । वे सामूहिक रूप से सारे कार्य के प्रभारी होंगे और मंत्रिमंडल की बठकें सबसे वरिष्ठ सदस्य श्री नन्दा की अध्यक्षता में होंगी ।

श्री मुकर्जी ने कुछ मामलों के बारे में अपनी आशंकाएं व्यक्त की हैं । जैसा कि मैंने बताया मैंने ब्रिटिश प्रधान मंत्री की ईमानदारी पर आपत्ति नहीं उठाई है और न ही मैं ऐसा करने का विचार रखता हूं । परन्तु मैं उनको आश्वासन दे सकता हूं कि आधारभूत बातों के बारे में कोई समझौता नहीं किया जायेगा । ऐसा कभी नहीं होगा ।

जहां तक श्री द्विवेदी की टिप्पणियों का संबंध है हमने पहले से ही इस बात पर काफी बल दिया है कि जो कुछ किया जाना है शीघ्र किया जाना चाहिये । मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि ब्रिटिश प्रधान मंत्री निश्चय ही इस कार्य को शीघ्र करने का प्रयत्न कर रहे हैं और वह चाहते हैं कि जो भी निर्णय हो यथासंभव शीघ्र लिया जाना चाहिये ।

कंजरकोट, वियरबट और छदवेट के संबंध में जहां तक श्री ऐन्थनी की टिप्पणियों का संबंध है हमारी नीति बिल्कुल स्पष्ट है व कच्छ के हिस्से हैं और हम इस नीति से पीछे नहीं हटेंगे ।

यह सत्र काफी समय से चल रहा है और इस सभा में जो विभिन्न सुझाव और मंत्रणा दी गई है हमें उनसे काफी लाभ हुआ है । मैं आश्वासन देता हूं कि हम सामान्य पृष्ठभूमि से अवगत हैं । सरकार की नीति की मोटी मोटी बातें इस सभा में बता दी गई हैं और सभा ने उनको सामान्य रूप से स्वीकार किया है । मैं चाहता हूं कि यह सभा और माननीय सदस्य सरकार पर कुछ भरोसा करें ।

श्री हिम्मत सिंहजी : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है ।

अध्यक्ष महोदय : आध घंटे की चर्चा । श्री नाथ पाई ।

श्री हिम्मत सिंहजी : प्रधान मंत्री स्पष्ट रूप से बतायें कि क्या यथापूर्व स्थिति का अर्थ उसी स्थिति से है जो विभाजन से पूर्व थी ।

अन्तर्धारा

अध्यक्ष महोदय : शांति, शांति । अब हम आधे घंटे की चर्चा करेंगे ।

बोकारो इस्पात संयंत्र

*BOKARO STEEL PLANT

श्री नाथ पाई (राजापुर) : बोकारो इस्पात संयंत्र की स्थापना के लिए सभी सहायता के सम्बन्ध में मैं ने जो कुछ कहा उससे, मुझे भय है, कुछ गलत फहमी पैदा हो गई है । कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा कि मैंने रूस के साथ करार की आधारभूत शर्तों की आलोचना

*आधे घंटे की चर्चा ।

*Half-an-hour-discussion.